विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

देश में संघर्ष जन्य प्रगति हेतु युवा क्रान्ति

हमारे देश भारत में अन्य देशों की तरह कई समस्याएँ हैं। कुछ भारत की अपनी हैं और कुछ सभी देशों में कमोबेश मौजूद हैं। उदाहरणार्थ विश्व की दूसरी सबसे बड़ी आबादी के साथ कम क्षेत्रफल हमारी विशेष समस्या है। परंतु महँगाई, बेरोज़गारी व भ्रष्टाचार सारे विश्व की समस्याएँ हैं। इसी तरह आतंकवाद से भी सारा विश्व पीड़ित है। एक बहुत बड़ी बुराई जो कुछ देशों की स्थायी प्रवृत्ति है और वह है विस्तारवाद एवं साम्राज्यवाद की। जबकि भारत इस बुराई से बिल्कुल अछूता है। गुलामी के समय में तो हमारा शोषण हुआ ही परंतु स्वतंत्रता के बाद भी हमारे नेता व अधिकारी हमारा शोषण करते रहे हैं और यही कारण है कि भारत उतना विकास नहीं कर सका जितना वह कर सकता था। इसमें सबसे अधिक समस्याएँ परिवारवाद व अल्प संख्यक एवं कई अन्य वर्गों के प्रति अधिकाधिक तुष्टीकरण की नीति के कारण हैं। इन दोनों नीतियों ने आज देश में सत्ता लिप्सा एवं इस हेतु 'बाँटो और राज करो' की प्रवृत्ति को बढ़ाया है।

इन सब समस्याओं के बावजूद हाल ही के वर्षों में भारत ने एक सशक्त, समर्थ व सबल राष्ट्र की छवि प्राप्त की है। इसके पीछे कई अनेक कारणों के साथ कुछ महापुरुषों के त्याग व बलिदान उत्तरदायी हैं। नेताजी सुभाष बोस, शहीदे आज़म भगत सिंह, बाल गंगाधर तिलक, मालवीयजी, खुदीराम, बिस्मिल आदि हमारे अमूल्य रत्न हैं। सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, नरसिंहराव, अटल विहारी वाजपेयी, नरेन्द्र मोदी आदि हमारे आदर्श नेता हैं। इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि अन्य कई व्यक्तियों का योगदान नहीं है, परंतु उन्होंने अपनी कुछ दुर्बलताओं के कारण कुछ स्थायी समस्याओं को भी जन्म दिया।

इस आलेख में कुछ महापुरुषों की सदप्रेरणा से युवक-युवतियों में संघर्ष करने व आगे बढ़ने की चेष्टा जाग्रत हुई। आज एक नहीं अनेक उदाहरण हैं जिनमें शून्य से शिखर तक पहुँचने के प्रमाण हैं। दलित, शोषित, वंचित भी जीवन के हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं। निम्न मध्यम वर्ग के लाखों सदस्य उच्च मध्यम वर्ग में पहुँचे हैं।

जहाँ सरकारों से अपेक्षाएँ बढ़ीं हैं, यह कहना अनुचित होगा कि सरकारों ने उनकी पूर्ति का प्रयास नहीं किया है। कोरोना की महामारी के लम्बे समय में 80 करोड़ आबादी को मुफ्त भोजन जुटाया गया है। कोरोना से लड़ने हेतु टीका आविष्कृत किया, कोरोना का टीकाकरण किया। पूर्व के मुकाबले भारत की सैन्य शक्ति कई गुना बढ़ी है। आज भारत माँगने वाला नहीं, देने वाला राष्ट्र बन गया है। औषधियाँ, अन्न, सैन्य सामान निर्यात करने लगा है।

राजनेताओं एवं अधिकारियों तथा अधिकांश जनता के स्वार्थ के उपरान्त भी युवा वर्ग में एक प्यास जगी है, आगे बढ़ने की। सबसे अधिक चेतना शिक्षा के प्रति आई है। जन सामान्य में यह विचार घर करता गया कि शिक्षा ही उनके जीवन को बदल सकती है। इसके लाखों नमूने मिल जायेंगे। मुम्बई एक टेक्सी में यात्रा कर रहा था, टेक्सी ड्राइवर उत्तरी भारत से था। पता चला कि उसके दो पुत्र हैं, एक एम.बी.ए. कर बैंक में है व दूसरा इंजीनियरिंग में पढ़ रहा है। इसी प्रकार एक दूसरे ड्राइवर की पुत्री भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही बताई गई। एक दिन एक ऑटो में सफर करते हुए उससे पता लगा कि वह मेकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा है। पड़ौस में एक लड़की कई घरों में झाड़ू-पोंछा लगाने, बर्तन माँजने का कार्य करती है। पता लगा कि वह इतिहास तथा राजनीति विज्ञान में दोहरा अधिस्नातक है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही है, एक दिन वह उच्च अधिकारी अवश्य बनेगी। और भी तारीफ की बात यह है कि वह अनुसूचित जनजाति की गमेती (भील) कन्या है। और हाँ स्वभाव और व्यवहार भी देखिये। एक दिन स्कूटर इधर-उधर खिसकाते हुए घर में गिर पड़ा। वह साइकल पर जा रही थी। मुझे देखा, साइकल रखी और दौड़ कर मुझे उठाया। शाबाश बेटा, धन्य है तुम्हारी जैसी अनेक लड़कियाँ हमारे देश का गौरव बढ़ा रही हैं। वाह रे देश, क्या इन्हीं में से एक हमारी महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू नेता व राष्ट्रपति नहीं हैं। महाभारत काल की द्रोपदी (पाँचाली) अग्निकुंड से प्रकट हुई थी। वह भी अग्नि में तप कर कुंदन बनकर निकली थी। उसी के सतीत्व से, उसकी प्रेरणा से, उसी के संकल्प से पाण्डवों को महाभारत में कौरवों पर विजय मिली। उसी के सतीत्व व नारीत्व के मान-सम्मान की रक्षा हेतु कृष्ण ने पाण्डवों का साथ दिया। यही नहीं गीता का महान उपदेश देकर अर्जुन को कायरता के पाप से बचाया। हमारी राष्ट्रपति द्रोपदी भी करोड़ों-करोड़ों भारतीय नारियों का आदर्श हैं, उनकी प्रेरणा हैं। एक अत्यंत निर्धन परिवार की आदिवासी ग्राम बाला ने इतिहास के नये पृष्ठ लिख दिये हैं। क्या वह भी निर्धनता, पति एवं पुत्र विछोह एवं वियोग की अग्नि में नहीं तपी। वह मुंह में चांदी का चम्मच लिये नहीं जनमी थी और वे पेराशूट से उतर कर नेता ही नहीं राष्ट्रपति बन गईं। वह घोर संघर्ष करके पढ़ीं, छोटी-छोटी नौकरियाँ कीं, पार्षद, विधायक, मंत्री तथा राज्यपाल की सीढ़ियाँ चढ़ कर आज राष्ट्रपति हैं। महामहिम द्रोपदी, तुम्हे कोटि कोटि प्रणाम, तुम भारत की ही नहीं सारे विश्व की करोड़ों नारियों की प्रेरणा हो, एक नये युग की, एक नई युवा क्रांति की पढ़ीं सूत्रधार हो, अब करोड़ों नारियाँ महामहिम के पद तक पहुँचने का प्रयास करेंगी।

पूर्व अमर महामहिम राष्ट्रपति कलाम, वर्तमान राष्ट्रपति आदिवासी महामहिम द्रोपदी मुर्मू व एक चाय बेचने वाले से प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे ये महापुरुष एक नवयुग के सूचक हैं। ये प्रतीक हैं हिंद महासागर की उत्ताल लहरों के, ये प्रतीक हैं हमारी गगनचुम्बी हिमालय की चोटियों के जो यह जय घोष कर रही हैं कि भारत का युवा जाग चुका है, वह आगे ही आगे बढ़ेगा, तिरंगा लेकर, अब वह भारत के भाल को झुकने नहीं देगा।

एक युग प्रवर्तक, एक युगांतर कारी, एक नये युग के सूत्रधार का नाम इतिहास में और चमकता है और वह है पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का। अरे याद करो इस अखबार बेचकर पढ़ने वाले महापुरुष को जो मंदिरों व मस्जिदों की कृपा से तन, मन, धन से समर्थ हुआ। कृतज्ञ राष्ट्र को शक्तिशाली आग्नेयास्त्र देकर अमर हुआ। भारत का महामहिम राष्ट्रपति बना। अनेक राजसी प्रयासों को अनेक गुलामी के समय की रूढ़ियों को तोड़ा। देश प्रेम का अनुसरणीय उदाहरण राष्ट्रप्रेम का अमर संदेश देकर गया। सत्यमेव जयते का घोष कर कहा कि मुस्लिम मूलत: आतंकी नहीं, वह मदरसों में आतंकी बनाया जाता है।

आज लाखों-करोड़ों युवा-युवती एक नवीन भारत, एक सशक्त, समर्थ, संपन्न भारत के निर्माण में अपने नये विचारों, नये संकल्पों व नवीन उपक्रमों के सफल प्रयोग कर रहे हैं। पूर्व अमर महामहिम राष्ट्रपति कलाम, वर्तमान राष्ट्रपति आदिवासी महामहिम द्रोपदी मुर्मू व एक चाय बेचने वाले से प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे ये महापुरुष एक नवयुग के सूचक हैं। ये प्रतीक हैं हिंद महासागर की उत्ताल लहरों के, ये प्रतीक हैं हमारी गगनचुम्बी हिमालय की चोटियों के जो यह जय घोष कर रही हैं कि भारत का युवा जाग चुका है, वह आगे ही आगे बढ़ेगा, तिरंगा लेकर, अब वह भारत के भाल को झुकने नहीं देगा।

–अतिथि सम्पादक,
कैलाश विहारी वाजपेयी,
(स्वतंत्र चिंतक व लेखक)

राशिफल शनिवार 10 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, शनिवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र प्रात: 7:37 तक, धृति योग दिन 7:54 तक, ठ्ठव करण दिन 3:29 तक, चन्द्रमा रात्रि 3:53 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज बुध वक्री प्रात: 9:10 पर होगा। आज सत्यव्रत है और भ्रक व्रत सप्ताह और गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त होगा और सप्तमह का चातुर्मास पूर्ण होगा। आज पंचक है। आज पूर्णिमा और षौडषदी का श्राद्ध है। आज से पितृपक्ष और मोक्षवय श्राद्ध आरम्भ होंगे। आज पूर्णिमा का श्राद्ध दिन 1:38 से 3:29 तक और प्रतिपदा का श्राद्ध दिन 3:30 से 4:05 के मध्य में समाप्त होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:46 से 9:19 तक, चर 12:24 से 1:56 तक, लाभ-अमृत 1:56 से 5:02 तक।
राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:34

मेष
अपने आर्थिक/वित्तीय मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आय में वृद्धि हो सकती है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धन प्राप्त होगा।

मिथुन
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक मामलों से संबंधित परेशानियां दूर होने लगेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित परामर्श मिलेगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक
घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यक्तिगत कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मीन
व्यक्तिगत कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

क्षमा दिवस-विश्व शांति का एक मात्र अहिंसात्मक अस्त्र

भागचंद जैन मित्रपुरा

जैन धर्म एक अनादि – अनंत – शाश्वत धर्म है। सभी धर्मों का चरम उद्देश्य स्व कल्याण, मानव कल्याण के साथ जीव मात्र का कल्याण है। जैन धर्म में अहिंसा, अनेकान्तवाद, अपरिग्रह एवं क्षमा अपनाने पर जोर दिया गया है।

जैन धर्मावलंबियों द्वारा भाद्र पद माह में पर्यूषण पर्व – दशलक्षण धर्म – उत्तम क्षमा , उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तमतप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन एवं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म बड़ी श्रृद्धा एवं भक्ति पूर्वक मनाये जाते हैं।

जैन दर्शन में पर्यूषण या दशलक्षण पर्व के दिनों में आध्यात्मिक तत्वों की हम आराधना करके अपना और अपने जीवन मूल्यों का स्पर्श करते हैं। इसकी समाप्ति के ठीक एक दिन बाद अश्विन कृष्णा एकम के दिन बड़े स्तर पर विशेष पर्व मनाया जाता है और वह है क्षमावाणी पर्व। इस महा पर्व के समापन दिवस को "क्षमा दिवस" के रुप में मनाया जाता है। इस दिन संपूर्ण प्राणी जगत को सुख शांति का संदेश देते हैं। जानने और समझने की बात है, इस दिन सभी लोग बिना हिचकिचाहट एक दूसरे से अपनी जानी अनजानी गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं। सचमुच में एक आत्मिक सुधार का अलौकिक त्यौहार है "क्षमा दिवस", जिसमें मन, वचन और कर्म के संगम से क्षमा मांगी जाती है। इस तरह दशलक्षण धर्म उत्तमक्षमा धर्म से आरंभ होकर क्षमावाणी पर्व मनाने के साथ समापन होता है। मात्र क्षमा भाव होने से सभी दशलक्षण धर्म स्वत: विकसित होने लगते है ।

दुनिया में यह अपने तरह का अलग पर्व है, जिसमें क्षमा मांगी जाती और क्षमा की जाती है। इस दिन प्रत्येक जीव से अपने जाने या अनजाने में किए गए अपराधों के प्रति क्षमायाचना की जाती है। बधाइयों के पर्व बहुत होते हैं, जिनमें शुभकामनाएं दी जाती हैं, लेकिन जीवन में एक ऐसा दिन भी आना चाहिए, जब हम अपनी आत्मा के बोझ को कुछ हल्का कर सकें। अपनी भूलों का प्रायश्चित करना तथा यह प्रतिज्ञा करना कि दूसरी भूल नहीं करेंगे, यह हमारे आत्मविकास में सहयोगी होता है।

क्रोधादि कशाघातों से मानव क्रूर – कर्कश दानव तक बन जाता है, क्षमा व्रत का पालन करने से मानव देवता बन जाता है।

शूरवीर की शक्ति का मापदंड ही क्षमा होता है ।

क्षमा शस्त्रम करिष्यती दुर्जन: ।

अत्रणे पतितो वहीं: स्वय मेव प्रशाम्यति ।

जिसके पास क्षमा का सामर्थ्य तथा बल है, उसका दुष्ट, दुर्जन कुछ भी नही बिगाड सकते । तृण रहित स्थान पर गिरी हुई अग्नि स्वत: ही बुझ जाती है ।

संसार में सुख और शांति का मूल क्षमा है । हम अपने जीवन में कितने ही बुरे कर्म जान-बूझकर करते हैं और कितने ही हमसे अनजाने में हो जाते हैं। हमारे कृत्यों की वजह से दूसरों का मन आहत हो जाता है। क्षमावाणी पर्व हमे वर्ष में कम से कम एक बार इस पर विचार करने का अवसर देता है कि हमने कितनों को आहत किया है, ठेस पहुंचाई है । चली आ रही दुश्मनी, बैर-भाव की गांठ को बांधकर आखिर हम कहां जाएंगे? जब हम किसी से क्षमा मांगते हैं तो दरअसल अपने ऊपर ही उपकार करते हैं।

अच्छाई की ओर प्रवृत्त होने की भावना जब हर मानव के चित्त में समा जाएगी, तब मानव जीवन की तस्वीर ही कुछ और होगी। क्षमा वीरों का आभूषण है, कायरों का नहीं। कायर तो प्रतिकार करता है। प्रतिकार करना आम बात है, लेकिन क्षमा करना सबसे हिम्मत वाली बात है।

क्रोध एक दुर्बलता है। मानव-जीवन में वह सहज है, किन्तु तभी तो उसे विजित करने की आवश्यकता है – मानव-जीवन का लक्ष्य ही है- कमजोरी, दुर्बलता को विजित करना तथा मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास करना ।

क्षमा भाव अंतस का भाव है। जो अंतस की शुद्धि के आकांक्षी हैं, वे सभी इस पर्व को मना सकते हैं। इस शाश्वत आत्मिक पर्व को जैन परंपरा ने जीवित रखा हुआ है। क्षमा तो हमारे देश की संस्कृति का पारंपरिक गुण हैं। यहां तो दुश्मनों तक को क्षमा कर दिया जाता है। हमारी संस्कृति कहती है –मित्ती में सव्व भूयेसु, वैर मज्झंण केणवि। प्राकृत भाषा की इस सूक्ति का अर्थ है सभी जीवों में मैत्री-भाव रहे, कोई किसी से बैर-भाव न रखे। जैन संस्कृति ने इस सूक्ति को हमेशा दोहराया है।भगवान महावीर ने कहा है कि "कोहो पिईयपणा सई" क्रोध प्रीति का नाश करता है। क्रोध पर विजय पाने के लिए एक मात्र उपाय 'क्षमा' है। क्षमा से ही जीव को मानसिक शान्ति मिलती है। क्षमापना से वैमनस्य दूर हो जाता है, मन हल्का हो जाता है।

गलतियों पर सजा देने का हक न स्वयं को है न दूसरो को। क्षमाभाव से दोहरा लाभ मिलता है सामने वाले को आत्मग्लानी से मुक्ति दिलों की दूरियां दूर कर सहज वातावरण का निर्माण होता है।

- **क्षमावाणी पर्व को वैश्विक स्तर पर विश्व क्षमा दिवस के रूप में मनाने की आवश्यकता**
- **जैन दर्शन में पर्यूषण पर्व के समाप्ति के ठीक एक दिन बाद अश्विन कृष्णा एकम के दिन बड़े स्तर पर विशेष पर्व मनाया जाता है और वह है क्षमावाणी पर्व**

दुर्बल व्यक्ति ही अधिक क्रोध करता है। क्योंकि क्रोध के अतिरिक्त वह और कुछ कर ही नहीं सकता शक्तिशाली व्यक्ति का कोई कुछ बिगाड नहीं सकता है, अत: निरर्थक क्रोध की उसे आवश्यकता नहीं होती । या तो वह पूर्ण प्रतिकार करता है, अथवा यदि वह अधिक विचारवान है तो वह क्षमा करता है । अत: यह कहा जा सकता है कि क्रोध करना कायरों का कार्य है, वीरों का धर्म तो क्षमा करना ही है ।

अहम, बदले की भावना, क्रोध, एक दूसरे से आगे बढ़ने की इच्छा, ईर्ष्या भाव, गलती न मानना, सहनशीलता का अभाव, अविवेकपूर्ण निर्णय, भेदभाव पूर्ण व्यवहार आदि दुर्गुण केवल मात्र क्षमा अपनाने से दूर हो सकते हैं।

व्यक्तिगत तौर पर मन-मलीनता, कटुता में कमी, यथानुरूप रक्त संचार, तनाव से मुक्ति, बदले की भावना नष्ट होना, सकारात्मक सोच, सद्भाव, खुशहाली में बढ़ोतरी होती ।

परिवार में क्षमा भावना से परिवार में आपसी समन्वय, सद्भावना और एकता बनी रहती है । समाज में भाईचारा बना रहता है, विकास की संभावनाएं बनती है। एक दूसरे के प्रतिद्वंदी के बजाय पूरक बनकर सहभागिता जन्म लेती है । देश में एकता की भावना जागृत होती है, टैक्स की राशि पुलिस, न्यायालय आदि व्यवस्था में कम खर्च होती है, जो देश के विकास को गति प्रदान में सहायक होती है। वैश्विक स्तर पर सीमा पर मनमुटाव, लड़ाई, की संभावना समाप्त होकर आपसी समन्वय एवं सद्भाव से पूरे विश्व में शांति स्थापित हो सकती है ।

यद्यपि क्षमावाणी पर्व जैन धर्मावलंबियों द्वारा मनाया जाता है, तथापि जैन धर्म के सिद्धांतो की अनुपालना करने वाला कोई भी जैन बन सकता है और क्षमावाणी पर्व मना सकता है । क्षमा पर्व मनाना केवल जैनियों का ही अधिकार नहीं है । क्षमा एक ऐसा आत्मशोधक गुण है, जिसकी सभी को आवश्यकता है क्योंकि इंसान को गलतियों का पुतला कहा जाता है । गलती मानना एवं उसमे सुधार करने का सभी को अधिकार होना चाहिए। अंतस के मूलगुण किसी धर्म-संप्रदाय से बंधे नहीं होते, इसीलिए क्षमापर्व सर्वधर्म समन्वय का भी आधार है।

भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फ़ोरम, जयपुर।

शहरी रोजगार गारंटी योजना के शुभारम्भ समारोह में नहीं पहुंचे श्रमिक

मालपुरा, (निसं)। मनरेगा की तर्ज पर शहरी क्षेत्र में भी मुख्यमंत्री की बजट घोषणा के अनुरूप शुरू की गई इन्दिरा गांधी शहरी रोजगार गारंटी योजना का शुक्रवार को पालिका प्रशासन की ओर से घाटी रोड पर आंशिक रूप से उद्घाटन समारोह आयोजित कर योजना के शुभारम्भ की औपचारिकता पूरी की गई।

- **ईओ ने जुटाई सफाई कर्मचारियों की भीड़, एसडीएम ने उद्घाटन समारोह की पूरी की औपचारिकता**
- **प्रचार-प्रसार के अभाव में जरूरतमंद बेरोजगार श्रमिक बेखबर रहे**

मालपुरा में शहरी रोजगार गारंटी योजना के शुभारम्भ समारोह में खाली रहा पाण्डाल।

समारोह स्थल पर पालिका प्रशासन द्वारा सौ व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था तो की गई लेकिन समारोह के निर्धारित समय 10 बजे का रखे जाने के बावजूद दोपहर 12 बजे तक भी समारोह स्थल वीरान रहा। प्रचार-प्रसार व सूचनाओं के अभाव में शहर के जरूरतमंद बेरोजगार श्रमिक एवं ऑनलाइन पंजीकृत श्रमिक शुक्रवार को आयोजित समारोह से बेखबर रहे। दोपहर बाद कार्यवाहक ईओ देशराज मीणा व कार्मिकों ने संविदा पर कार्यरत सफाई कर्मचारियों को समारोह स्थल पर बुला भीड़ जुटाने का प्रयास किया वो भी नाकाफि रहा। दोपहर बाद एसडीएम आरके वर्मा, तहसीलदार सहदेश मंडा, प्रधान सकराम चौपडा, सीआर गोपाल गुर्जर, उपाध्यक्ष पवन मैन्दवास्या, पीडब्ल्यूडी एक्सईएन आरडी मीणा ने समारोह स्थल पहुंच उद्घाटन व योजना शुभारम्भ कर औपचारिकता पूर्ण की।

शहरी रोजगार गारंटी योजना की हुई घोषणा पर 950 से अधिक शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले जरूरतमंद एवं कमजोर वर्ग के व्यक्तियों ने रोजगार के लिए अपना आवेदन किया था। योजना के शुभारम्भ पर पहले चरण में सौ श्रमिकों को जॉबकार्ड वितरण व रोजगार दिया जाना था लेकिन पालिका प्रशासन की उदासीनता एवं पालिका में चल रहे अध्यक्ष व ईओ बदलने के घटनाक्रम के चलते समारोह स्थल पर ना तो पंजीकृत श्रमिक पहुंच पाये और ना ही पार्षद। 35 पार्षदों व 50 हजार की आबादी वाली नगरपालिका शहरी क्षेत्र से सरकार की फलैगशिप योजना के शुभारम्भ समारोह में महज 9 पार्षद व 22 पंजीकृत श्रमिकों सहित दो दर्जन लोगों की मुट्ठीभर भीड की उपस्थिति रहने के चलते औपचारिकताए पूरी की गई।

जानकारी अनुसार बीते दो माह में पालिका प्रशासन ने उक्त योजना के प्रचार-प्रसार पर लाखों रूपये की प्रचार-सामग्री चस्पा करने व वितरण करवाने के नाम पर सरकारी कोष से खर्चा दिखा भुगतान किया गया लेकिन शहर में किसी भी कोने में उक्त योजना को लेकर कही भी प्रचार-सामग्री नजर नहीं आ रही। जो कि सरकारी खजाने की खुली लूट को दर्शाता है। पालिका कार्यालय से मिली जानकारी में सामने आया कि 24 अगस्त को न्यायालय द्वारा पालिका अध्यक्ष सोनिया सोनी के निलम्बन आदेशों को निरस्त कर उन्हें बहाल कर दिया गया। लेकिन 15 दिन बाद भी स्वायत शासन विभाग द्वारा भाजपा की सोनिया सोनी को विभागीय आदेश जारी नहीं किये गये तो कार्यवाहक ईओ देशराज मीणा ने भी निदेशालय से मार्गदर्शन चाहे जाने का पत्र प्रेषित कर सोनिया सोनी को रिकॉर्ड में कार्यभार नहीं दिये जाने के चलते नियमों व कानून की पेचीदगियों के चलते सोनिया सोनी व पार्षद समारोह से दूर रहे।

कोटड़ा महोत्सव 27 को

उदयपुर, (निसं)। जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने नवाचार करते हुए आगामी 27 सितंबर को कोटड़ा महोत्सव 2022 मनाने की घोषणा की है।

जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने शुक्रवार को इस महोत्सव की आवश्यक तैयारियों को लेकर संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक ली एवं समय पर तैयारियां पूर्ण करने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने कहा कि उनका मकसद है उदयपुर आने वाले पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों में भी जाएं एवं यहां की संस्कृति के दर्शन कर सकें।

- **उदयपुर कलेक्टर ने तैयारियां करने के दिए निर्देश**

जिला कलेक्टर ने महोत्सव के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की लोक संस्कृति, लोक कला, लोक उत्पाद, वाद्य यंत्र, आभूषण आदि के वैशिष्ट्य का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने महोत्सव के दौरान आकर्षक परंपरागत खेल गतिविधियां जैसे रस्साकशी, साफा या पगड़ी बांधो प्रतियोगिता, तीरंदाजी, सतोलिया, गुल्ली डंडा जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित करने के निर्देश दिए। बैठक में होटल एसोसिएशन के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे जिनसे स्पॉन्सर करने की अपील की। बैठक जिला कलेक्टर ने सरकार की योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु फोल्डर्स को महोत्सव में रखने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर कोटड़ा महोत्सव की व्यापक तैयारी की समीक्षा के लिए पुन: एक बैठक रविवार को 12.30 बजे कोटड़ा में लेंगे।

संत-महात्माओं की सुरक्षा एवं वैभव

संत-महात्मा एक लम्बे समय तक तप और तपस्या के बल पर जो अलौकिक ज्ञान प्राप्त करते हैं फिर उसी ज्ञान रूपी महाप्रसाद को अपने गृहस्थ एवं सांसारिक मजबूरियों में व्यस्त भक्तों को वितरित करने के पुनीत कार्य में जीवन समर्पित कर देते हैं। ऐसे पवित्र और मंगलमय कार्य करने वाले संतों के हजारों-लाखों शुभचिन्तक एवं अनुयायी होते हैं। सौभाग्य से आज भी हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में इतनी गिरावट नहीं आयी है कि कोई संतों के प्रति दुर्भावना रखे। जो सज्जन संतों के विचारों से सहमत नहीं है।

ऐसे संत महात्माओं को भारतीय समाज में किसी भी प्रकार का खतरा होने का कोई सवाल ही नहीं है। राज्य सरकार द्वारा उन्हें राजकीय अतिथि का दर्जा प्रदान कर के सुरक्षा के लिए 15-20 पुलिस वालों की टीम लगाने का कोई औचित्य समझ में नहीं आता है। मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति का स्टेट्स तो नि:संदेह पुलिस की घेराबन्दी से बढ़ सकता है। वैसे भी हमारे देश में राजनीतिज्ञ, नौकरशाह एवं न्यायाधिपति जनता में अपना रूतबा दिखाने के लिए पुलिस घेराबन्दी की सजावट को पसन्द करते है। परन्तु संतो की समाज में जो छवि है, आदर भाव है, पुलिस की यह घेराबन्दी श्रद्धालुओं के मन में उस आदर भाव को कम करती है। राजस्थान जैसे शान्त प्रदेश के राष्ट्रीज राज मार्ग जैसी चहल-पहल वाली जगह पर यदि संतों को सुरक्षा प्रदान करना पड़े तो फिर आम नागरिक दूर-दराज के गांव-खलिहान या जंगल में किस सुरक्षा व्यवस्था के भरोसे जी रहा है ?

ऐसे निर्णय सुरक्षा के लिए नहीं, वोटों की राजनीति के आधार पर लिए जाते हैं। जिससे आदरणीय गुरूवर के हजारों-लाखों अनुयायियों को यह संदेश देना है कि सरकार आपके गुरूजी के प्रति कितनी संवेदनशील और चिन्तित हैं। राजनीतिज्ञ अपनी जगह ठीक है। गुरूवर के भक्तों का सोच भी अपनी जगह उचित लगता है। इससे उनके आचार्य का समाज में सम्मान व स्टेट्स बढ़ जाता है। व्यवहार में यह सुरक्षा का आवरण नहीं है अपितु छद्म आडम्बरों का अम्ब्रेला है।

सोच और चिन्तन का मूल दायित्व तो स्वयं संत महात्माओं का है। क्या सुरक्षा का यह नाटक उनके ज्ञान और वैराग्य के सामने बहुत तुच्छ नहीं है ? क्या इसी सुरक्षा व्यवस्था को प्राप्त करने के लिए यह वैराग्य प्राप्त किया? नहीं, तो फिर छोड़िये इस आडम्बर को। आपके और श्रद्धालुओं के मध्य दीवार मत खड़ी करिये। ज्ञान और आध्यात्म की प्राप्ति के लिए संत-मुनीगण दूर-दराज के जंगलों एवं कन्दराओं में तप और साधना में जीवन पर्यन्त व्यस्त रहते आये हैं। हजारों वर्षों से देश में संतों के प्रति जो वन्दनीय भाव है, उसे अक्षुण बनाये रखने के लिए सुरक्षा के इस मायाजाल को छोड़ना होगा। अपने शिष्यों व श्रद्धालुओं के मध्य रहिये, बडा आनन्द आयेगा-आपको, भक्तों को एवं समाज को।

डॉ. कैलाश सोडाणी

ऐसा ही एक दृश्य उदयपुर के नजदीक एक बड़े विद्वान संत के रामायण पाठ में दिखाई दिया, जहां गुरूवर के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए पाण्डाल में प्रवेश हेतु आपका वी.वी.आई.पी. होना आवश्यक था। वी.वी.आई.पी. होना कोई गलत नहीं है। एक लम्बें संघर्ष एवं मेहनत का प्रसाद है। परन्तु ऐसे महान संत और आम श्रद्धालु के मध्य बढ़ती यह दूरी उचित नहीं है। आम भक्त की अपने आदरणीय संत तक पहुंच बहुत ही सहज होनी चाहिये। उनकी ईश्वरीय एवं ओजस्वी वाणी को सुनने का सभी को समान अवसर मिलना चाहिये। संतों का स्थायी आवास कुटिया हैं। वैभवशाली अट्टालिकाएं नहीं। इसलिए संतों के आवास व भोजन व्यवस्था का स्वर्णिम अवसर गरीब श्रद्धालुओं को भी मिलना चाहिये। संतों के लिए सभी भक्तगण समान हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं है। परन्तु व्यवहार में यह अन्तर बढ़ता जा रहा है। इसलिए कभी-कभी गरीबों की बस्ती में भी संत-महात्माओं को अपने प्रवचन व सत्संग का आयोजन रखना चाहिये।

- **अभी हाल ही में अखबारों में जो समाचार और फोटो देखने को मिले, उससे मन को कष्ट हुआ।**

21वीं शताब्दी में चारों ओर धन कमाने की होड़ लगी हुई है। धन के लालच में हम सभी आध्यात्म को भूलते जा रहे हैं। जीवन में धन और आध्यात्म दोनों का महत्व है। इसमें बैलेंस बनाये रखने की जिम्मेदारी संतों की है। संतों के सानिध्य में ही व्यक्ति परम शान्ति के नजदीक पहुंचता है। चिन्ता का विषय यह है कि इन तथाकथित आडम्बरों के मायाजाल में तो संत स्वयं कहीं आध्यात्म से दूर नहीं चले जायेंगे? ऐसे तो धीरे-धीरे समाज की स्थापित व्यवस्था बिगड जायेगी। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट आ सकती है। संतों द्वारा कठोर तप और तपस्या से प्राप्त इस अलौकिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसाद को भक्तगणों में बांटने के लिए फिल्मों के जैसे प्रचार-प्रसार एवं वैभव की नहीं, एक शान्त, गम्भीर एवं गरिमामय माहौल की जरूरत है। जिसे बनाने की जिम्मेदारी भी संत-महात्माओं की ही है।

–डॉ. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलपति
महर्षि दयानन्द सरस्वती विवि, अजमेर, गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाडा